अभिनन्दन टिप्पणी *
दुव्वुरी सुब्बाराव

नमस्कार, भारतीय रिज़र्व बैंक की ओर से मैं प्रोफेसर मौरिस ऑब्स्टफेड का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ जो अभी थोड़ी देर में एल. के. झा मेमोरियल भाषण देंगे। श्रीमती जेनीफर ऑब्स्टफेल्ड का भी हार्दिक स्वागत। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि स्वर्गीय डॉ. एल. के. झा के परिवार के सदस्य श्रीमती दीपिका महाराज सिंह, श्रीमती शारिका ग्लोवर और मास्टर किरण ग्लोवर आज यहां उपस्थित हैं। आपकी उपस्थिति हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यहां पधारने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। निस्संदेह, हमारे सभी सम्माननीय आमंत्रित अतिथियों का हार्दिक अभिनन्दन जो इस भाषण को सुनने के लिए अपना बहुमूल्य समय निकालकर यहां पधारे हैं।

डॉ. एल.के. झा

2. डॉ. एल.के. झा भारत के सर्वाधिक विख्यात लोक सेवकों में से एक थे। आर्थिक प्रशासक के रूप में अपने असाधारण कैरियर के साथ और अनेकों प्रभावशाली कार्य करने के कारण लोक सेवकों की पीढ़ियों के लिए आदर्श रहे हैं। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद 'एलके', वे इसी नाम से जाने जाते थे, ट्रिनीटी कालेज, कैम्ब्रिज में अध्ययन के लिए गए जहां वे ए.सी. पिगाओ, जे.एम.केनस और डी.एच. रॉबर्टसन जैसे सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों के छात्र रहे। इन्होंने 1936 में भारतीय सिविल सेवा में प्रवेश किया। बिहार में अपने कैरियर की शुरुआत करने के बाद 1942 में ये भारत सरकार के समर्थन में आ गए जहां इन्होंने विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया और अंत में प्रधानमंत्री जी के सचिव की महती भूमिका निभाई।

3. डॉ. झा जुलाई 1967 से मई 1970 तक भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर रहे और उस समय अर्थव्यवस्था भारत के सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रही थी। देश खाद्यान्न सुरक्षा की चिन्ता से हिल गया था और इसे दूर करने के उपाय के रूप में 'हरित क्रांति' आई जिसका भरपूर स्वागत हुआ। गवर्नर झा के नेतृत्व में इन उपायों का कारगर करने में भारतीय रिज़र्व बैंक की भूमिका प्रभावशाली रही। इस अभावपूर्ण स्थिति के कारण निर्धनों को जिस संकट का सामना करना पड़ा उसके परिणामस्वरूप सभी नीतियों का प्रमुख मुद्दा गरीबी को कम करना बन गया। डॉ. झा के कुशल नेतृत्व में रिज़र्व बैंक ने कई नीतियां बनाई और उन्हें कार्यान्वित किया।

4. डॉ. झा ने रिज़र्व बैंक में अपने सेवाकाल के बाद संयुक्त राज्य अमरीका में भारत के राजदूत और जम्मू कश्मीर के राज्यपाल के रूप में कार्य किया। ये चहुँ ओर सुप्रसिद्ध ब्रैंड्ट कमीशन के भी सदस्य थे जहां उत्तर-दक्षिण सहयोग हेतु विश्वासपूर्ण मामला बना। इस ब्रैंड्ट कमीशन में उठाए गए कुछेक मुद्दे आज भी संगत हैं। यह डॉ. झा जैसे कमीशन के सदस्यों की दूरदृष्टि और विवेकशीलता का जीता-जागता प्रमाण है।

5. उनके नाम से यह भाषण श्रृंखला, देश की असाधारण सेवा करने और अत्यंत संकट के समय रिज़र्व बैंक में उनके नेतृत्व के लिए डॉ. झा को समर्पित है। अब तक 11 भाषण हो चुके हैं। पिछला भाषण दो वर्ष पूर्व फरवरी, 2010 में प्रो.जॉन टेयलर द्वारा 'उभरते बाजारों में मौद्रिक नीति हेतु वित्तीय संकट से शिक्षा' विषय पर दिया गया था। आज शाम इस श्रृंखला का 12 वां भाषण प्रो. ऑब्स्टफेल्ड देंगे।

सुप्रसिद्ध वक्ता - प्रो. मौरिस ऑब्स्टफेल्ड

6. प्रो. मौरिस ऑब्स्टफेल्ड असाधारण शैक्षणिक योग्यता प्राप्त और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात अर्थशास्त्री हैं, उनका परिचय देना सूरज को दिया दिखाने जैसा है। फिर भी मैं सहर्ष यह धृष्टता करने जा रहा हूँ क्योंकि यह समय की मांग है।

7. प्रो. ऑब्स्टफेल्ड इस समय अर्थशास्त्र के 1958 प्रोफेसर वर्ग के हैं और बार्कले में कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय (यूसी) में सेन्टर फॉर इन्टरनेशनल एण्ड डवेल्पमेन्ट इकॉनॉमिक रिसर्च (सीआईडीईआर) में निदेशक हैं। इन्होंने पाठ्यपुस्तक में ख्याति प्राप्त प्रो. रुदिगर डोर्नबुश की देखरेख में 1979 में मासाचुसेट्स इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी (एमआईटी) से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात्, प्रो. ऑब्स्टफेल्ड ने 1989 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बरकले में जाने से पहले कोलम्बिया में पेनसिलवानिया विश्वविद्यालय और हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य किया।

8. लेख प्रकाशित करना शिक्षा से जुड़े रहने का साधन है। कुछेक पाठ्य पुस्तकें भी लिखते हैं परंतु इनमें से विरले ही ऐसी पाठ्य पुस्तकें लिखते हैं जो किसी विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय सीमाओं से परे मानक शिक्षा सामग्री बन जाती हैं। प्रो. ऑब्स्ट्फेल्ड इसी चुनिन्दा श्रेणी में आते हैं। यहां उपस्थित कई लोगों ने अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर इनकी सारगर्भित पाठ्य पुस्तक से अर्थव्यवस्था सीखी होगी, जिसमें प्रो. पॉल क्रुगमान इनके साथ सह-लेखक के रूप में हैं।

* 12वें एल.के.झा स्मारक व्याख्यान में भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ. डी. सुब्बाराव, द्वारा 13 दिसंबर 2011 को दिया गया स्वागत भाषण।

9. अर्थशास्त्रियों को कई प्रकार से वर्गीकृत किया गया है - प्राचीन और नव-प्राचीन, समष्टि और व्यष्टि, केनेसियन और मुद्रावादी, निर्बन्ध बाजार और वामपंथी। आजकल अर्थशास्त्रियों को उनकी शैक्षणिक धारणा को वर्गीकृत करने के लिए नमकीन पानी और ताजा पानी में श्रेणीबद्ध किया जाता है जो संभवतः इस बात से संबंधित है कि उनका विश्वविद्यालय देश में है या समुद्र तट पर। प्रो. ऑब्स्ट्फेल्ड सामान्यतया तटीय स्कूलों में ही रहे हैं और यह देखना रुचिकर होगा कि उनकी शैक्षणिक धारणा इस नमकीन पानी - ताजा पानी के विभाजन में उचित बैठती है या नहीं।

10. प्रो. ऑब्स्ट्फेल्ड के सबसे पहले के अनुसंधानों का केन्द्र मुद्रा विनिमय दर और पूंजी प्रवाह के मॉडल और विदेशी मुद्रा मध्यवर्तिता सहित अवरोध नीतियों के प्रभाव रहे। बाद में, वे गत्यात्मक आशावादिता पर, जो अब तक अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं में मानक बन चुकी थी, आधारित मौद्रिक व वास्तविक अंतरराष्ट्रीय समायोजन के मॉडलों की ओर अग्रसर हुए। 1980 के दशक के मध्य में, प्रो. ऑब्स्ट्फेल्ड ने इस अन्तर्दृष्टि पर काम आरंभ किया कि मुद्रा विनिमय दर प्रणाली में उतार-चढ़ाव स्वतः अनुकूल हो सकते हैं। पश्चावर्ती घटनाओं, विशेषकर 1990 के दशक के अंत में आए एशियाई संकट ने इस सिद्धांत का समर्थन कर दिया।

11. प्रो. ऑब्स्ट्फेल्ड आज 'एकल वित्तीय प्रवाह, वैश्विक असंतुलन और संकट' पर बात करेंगे। यह विषय निरपवाद रूप से आज के संदर्भ में अपने आप विशेष है।

वैश्विक स्थिरता के लिए वैश्विक असंतुलनों को दूर किए जाने की आवश्यकता है

12. कोई संकट इतना गहरा नहीं है जितना कि यह जिससे हम गुजर रहे हैं और जिसका सरल या एक ही कारण है। प्रचलित संकल्पना के अनुसार, सितंबर, 2008 के मध्य में लेहमैन भाइयों के कारोबार का ढह जाना, संकट की शुरूआत के रूप में माना जाता रहेगा। एक स्तर पर यह सच भी होगा। वास्तव में, मैं भविष्य में लिखी जाने वाली वित्तीय पाठ्य पुस्तकों को 'लेहमैन पूर्व' और 'लेहमैन पश्चात्' में विभाजित होते देख सकता हूँ। परंतु यदि हम गहराई से सोचें तो हम यह सीखेंगे कि इस संकट के केन्द्र में दो मूल कारण हैं - वैश्विक असंतुलनों का बनना और पिछले 2 वर्षों में वित्तीय बाजारों में परिवर्धन। आज की सोच यह है कि ये दो मूल कारण परस्पर संबद्ध है और यह कि वित्तीय बाजार के परिवर्धन वैश्विक असंतुलनों के कारण ही हुए थे।

13. वैश्विक समष्टि असंतुलन इसलिए बन गए क्योंकि 1990 के दशक में हुए एशियाई संकट के कारण चीन और अधिकांश एशिया में बड़ी जमा और चालू खातों में आधिक्य हो गया था। ऐसा संयुक्त राज्य में विशेष सुविधापूर्ण उपभोग और चालू खातों में कमी के बड़ी मात्रा में बढ़ने के कारण हुआ। संक्षेप में, एशिया ने उत्पादन किया और अमरीका ने उपभोग किया।

14. और इन असंतुलनों का निर्माण क्यों हुआ? इसका उत्तर वैश्वीकरण में है - व्यापार का, श्रम का और वित्त का वैश्वीकरण। विश्व ने पिछले तीन दशकों में वैश्विक व्यापार में महत्त्वपूर्ण विस्तार देखा है; वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के समानुपात में वैश्विक व्यापार 1980 में 37 प्रतिशत से बढ़कर 2008 में वित्तीय संकट आने से ठीक पहले 53 प्रतिशत हो गया। वित्त का वैश्वीकरण अपेक्षाकृत अधिक फलदायी रहा, विशेष रूप से पिछले दशक में। विश्व को एक साथ लें तो सकल घरेलू उत्पाद में विदेशी आस्तियों और विदेशी देयताओं का अनुपात 1994 के 133 प्रतिशत से बढ़कर 2008 में 300 प्रतिशत से अधिक हो गया।

15. श्रम - वैश्वीकरण का प्रभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा। उभरते एशिया ने विश्व के श्रम समूह में तीन बिलियन और जोड़ दिए क्योंकि यह पिछले 2 दशकों से शेष विश्व के साथ एकीकृत हो गया था, अतः इसका तुलनात्मक लाभ बहुत बढ़ गया। वैश्वीकरण के तीनों आयामों - व्यापार, वित्त और श्रम ने एक साथ मिलकर उभरते एशिया की सहायता की जो उन्नत अर्थव्यवस्थाओं को किए गए निर्यात से और अधिक हो गया। इसके परिणामतः एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में चालू खाते में बड़ा और सतत आधिक्य हो गया तथा आयात उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में तदनुरूपी चालू खाते मे कमी हो गई। इन वैश्विक असंतुलनों ने वित्तीय क्षेत्र में हुई गतिविधियों के चलते इस संकट को इसके विस्फोटक आयामों तक ले जाने में सहायता की।

16. अतः, हम यहां से बाहर कब निकलेंगे। जी-20 अब वैश्विक अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक असंतुलनों को ठीक करने का चुनौतीपूर्ण कार्य सक्रिय रूप से कर रहा है। सितंबर, 2009 में इनकी पिट्सबर्ग सम्मेलन में, जी-20 के नेता 'सुदृढ़, स्थायी और संतुलित विकास हेतु रूपरेखा' पर सहमत हो गए थे और 'परस्पर मूल्यांकन प्रक्रिया' (एमएपी) के प्रति प्रतिबद्ध हो गए जिसमें इस रूपरेखा में निहित मूलभूत साझे उद्श्यों को पूरा करने के लिए प्रत्येक देश की प्रगति की बराबर समीक्षा होती है। वैश्विक असंतुलन, जो संकट के दौरान कम हो गए थे, इस निकासी के चरण में मुखर होने लगे, इस स्थिति को समझते हुए जी-20 ने यह निश्चय किया कि बाह्य संपोषनीयता का

[1] अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की व्यापार की दिशा संबंधी सांख्यिकी, जून 2010 के आधार पर परिकलित।

[2] अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की भुगतान संतुलन सांख्यिकी, जून 2010 के आधार पर परिकलित।

संवर्धन करना ही एमएपी के अगले चरण का केन्द्र बिन्दु होना चाहिए और यह कार्य रूपरेखा कार्य दल (एफडब्ल्यूजी) को सौंप दिया।

17. भारत के कनाडा के साथ मिलकर निरंतर वैश्विक असंतुलन का जायजा लेने और उसे दूर करने के लिए संकेतात्मक मार्गदर्शी सिद्धांत बनाने का काम रूपरेखा कार्य दल की अध्यक्षता करने का अवसर मिला है। वैश्विक अंसतुलन की समस्या को दूर करने के लिए इस कार्य की सफलता अत्यंत आवश्यक है।

18. वैश्विक असंतुलन का स्थायी समाधान खोजने की दिशा में अग्रसर हमें, देश के स्तर पर व्यक्तिगत रूप से और जी-20 स्तर पर सामूहिक रूप से शैक्षणिक अनुसंधन से अंतर्दृष्टि के जरिए मार्गदर्शन मिलेगा। इसी संदर्भ में प्रो. ऑब्स्ट्फेल्ड जैसे सूक्ष्मदृष्टि रखने वाले अर्थशास्त्री का कार्य महत्वपूर्ण होगा। सज्जनो ! आइए, हम मिलकर 12वें एल. के. झा मैमोरियल भाषण देने के लिए प्रो. मौरिस ऑब्स्ट्फेल्ड का अभिनन्दन करें।